ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-5* June- 2016
Innovation The Research Concept

हिंदी समीक्षा, समालोचना और आलोचनाः एक अनुशीलन

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

हिंदी वक्ताओं एवं लेखकों द्वारा समीक्षा, समालोचना और आलोचना शब्दों का प्रयोग अक्सर किया जाता है। हिंदी साहित्य में समीक्षा, समालोचना और आलोचना- तीनों शब्द महत्वपूर्ण हैं और इन तीनों शब्दों के अर्थ और प्रयोग को समझना नितांत आवश्यक है। सामान्य हिंदी वक्ता और पाठक के लिए इन तीनों शब्दों का सही अर्थ ज्ञात करना और इन शब्दों को सही अर्थ में समझना तब तक बहुत कठिन है जब तक कि इनके अर्थ को गहन रूप में न समझ लिया जाये। शाब्दिक आधार पर समीक्षा, समालोचना और आलोचना शब्दों का अर्थ निम्न प्रकार है-

समीक्षा —सम्+ईक्षा (देखना) अर्थात सम्यक रूप से देखना। समालोचना— सम्यक रूप से लोचन (.दृष्टि) से देखना। इस प्रकार से ऊपर के दोनों शब्द समानार्थी हैं। आलोचना शब्द का अर्थ एक पक्षीय दृष्टिकोण (विशेषतः नकारात्मक) से देखना ।

समीक्षा के व्यावहारिक प्रयोग को हिंदी साहित्य के अलावा खेल, फिल्म, कार्यक्रम, आयोजना इत्यादि के संदर्भ में किया जाता है । समालोचना मूलतः किसी भी पुस्तक या कृति के सबल एवं दुर्बल पक्ष को प्रस्तुत करने हेतु की जाती है। इस सबके विपरीत, आलोचना के अंतर्गत व्यक्ति, साहित्य, फिल्म एवं अन्य क्षेत्रों के अवगुण निकाले और प्रकट किये जाते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत समीक्षा, समालोचनाऔर आलोचना शब्दों के अर्थ को बताया गया है तथा साथ ही विभिन्न उदाहरणों और उद्धरणों के द्वारा इनके विभिन्न स्थितियों में प्रयोग पर भी प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः समीक्षा, समालोचना, आलोचना, अनुशीलन, समानार्थी, दृष्टिकोण, साहित्य, लोचन ।

प्रस्तावना

समीक्षा, 'सम् + ईक्षा' के मेल से बना है, ये शब्द। यहाँ सम् से मतलब है - पूरी तरह से और ईक्षा अर्थात् देखना, विचारना, देखने की क्रिया, दृष्टि या नज़र। इस तरह समीक्षा का शाब्दिक अर्थ है - छान-बीन या जाँच-पड़ताल करने के लिए किसी वस्तु या बात को अच्छी तरह से देखने की क्रिया अर्थात अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखना या परीक्षण करना।

साहित्य लेखन के अंतर्गत समीक्षा लेखन से तात्पर्य है-ग्रन्थों, लेखों आदि के गुण दोषों का विवेचन। पुस्तक 'कथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण' को पढ़ने के बाद उसके विषय में बताना उस पुस्तक की समीक्षा कहलाता है और उस लिखे विचार को ही समीक्षा लेखन कहते हैं। पुस्तकों और टीवी कार्यक्रमों की समीक्षाएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं । यदि आप कोई शो नहीं देख पाए या कोई पुस्तक नहीं पढ़ पाए तो उस पर लिखी गई समीक्षा पढ़कर आप उसके बारे में जान सकते हैं और निर्णय ले सकते हैं कि अगली बार उसे देखा जाए या नहीं।

पुस्तक समीक्षा से ही पाठक किसी पुस्तक को पढ़ने या ना पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। किसी पुस्तक के लेख, कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण पर समीक्षक की जो प्रतिक्रिया होती है; वह अच्छी या खराब हो सकती है, इसे पुस्तक समीक्षा में ईमानदारी से बताया जाता है। पुस्तक समीक्षा से पाठकों को पुस्तक के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। समीक्षा लेखन में लेखक के कार्य और उसके मूल्यांकन का गहन विश्लेषण

होना चाहिए। लेखन के उद्देश्य के आधार पर, विभिन्न शैलियों का उपयोग किया जा सकता है। समीक्षा एक निश्चित स्वर में एक निश्चित योजना के अनुसार लिखी जाती है।

समीक्षा लेखन के उदाहरण

1. **परिचयात्मक समीक्षा**– इसमें पुस्तक का सिर्फ सामान्य परिचय दिया जाता है।
2. **विश्लेषणात्मक समीक्षा**– विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में जिस विषय का वर्णन किया जाता है उसका विश्लेषण भी होता है।
3. **मूल्यांकन समीक्षा**– इसमें आलोचनात्मक और तुलनात्मक मूल्यांकन पर जोर दिया जाता है और उसी विषय पर लिखी गई दूसरी पुस्तकों से तुलना भी की जाती है।

समीक्षा करने के बुनियादी सिद्धांत

इस शैली में पाठ के गहन विश्लेषण, काम की सामग्री के संदर्भ में तर्क और इसके मुख्य विचार के बारे में संक्षिप्त निष्कर्ष की विशेषता है। विश्लेषण की गुणवत्ता समीक्षक के स्तर और क्षमताओं पर निर्भर करती है। समीक्षक को भावनात्मक रूप से रंगीन प्रतिकृतियों का उपयोग किए बिना अपने विचारों को तर्कसंगत और तार्किक रूप से व्यक्त करना चाहिए। समीक्षा के लेखक के लिए जरूरी है-प्रस्फुटन, उच्च स्तर की तैयारी, भाषा संस्कृति, विश्लेषणात्मक सोच।

पुस्तक समीक्षा का प्रारूप

पुस्तक समीक्षा लिखने के लिए इसका कोई निश्चित तरीका नहीं है, फिर भी इसके कुछ बिंदु होते हैं, जिससे एक अच्छी पुस्तक समीक्षा लिखी जा सकती है -

पुस्तक से संबंधित संक्षेप में वाक्य लिखना चाहिए

पुस्तक की पूरी कहानी को नहीं लिखना चाहिए। इसे बस संक्षिप्त रूप में बताया जाए। पाठक उसकी कल्पना कर सके इतना अवश्य छोड़ देना चाहिए । पुस्तक में जितनी भी घटनाएँ होती हैं उसका विस्तार से वर्णन नहीं करना चाहिए। समीक्षा करते समय इस बात का भी उल्लेख किया जा सकता है कि पुस्तक की श्रृंखला की अन्य पुस्तकों को पढ़ना आवश्यक है जिससे कि पुस्तक को आनंद पूर्वक पढ़ा जा सके। पुस्तक में आप किस बात से अधिक प्रभावित हुए यह बताना आवश्यक है। आप पुस्तक में किस चीज से ज्यादा प्रभावित हुए या आपको जो भी आकर्षक लगा था, उसका उल्लेख करें। वह विषय वस्तु, पात्र, या कथानक कुछ भी हो सकता है या और कोई दूसरी चीज़ भी हो सकती है। पुस्तक के विषय में खुद से ही कुछ प्रश्न किया जा सकता है और उसके उत्तरों पर आधारित पुस्तक समीक्षा लिखी जा सकती है। प्रश्न इस प्रकार के किये जा सकते हैं -

1. पुस्तक में आपको किस पात्र ने ज्यादा प्रभावित किया और आपको कौन सा पात्र पसंद आया और क्यों?
2. पुस्तक ने आपको हँसाया या रुलाया था?
3. क्या पात्र आपको वास्तविक लगे थे?
4. दृश्य किस तरह लिखे गए थे? दृश्य किस प्रकार के थे? जैसे – रहस्यात्मक दृश्य, रोमांटिक दृश्य, आनंद पूर्ण दृश्य आदि।
5. आप किस प्रकार संवाद से प्रेरित हुए थे?
6. किस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया गया था?
7. पुस्तक में जो चीज आपको पसंद नहीं आई थी, उस चीज का उल्लेख करे।
8. पुस्तक में आपको बहुत से अंश पसंद आये होंगे लेकिन पुस्तक के बहुत से अंश ऐसे भी हो सकते है जिसने आपको प्रभावित नहीं किया हो; जिसमें कहानी की शुरुआत, कहानी का अंत, विषय-वस्तु, पत्रों का व्यवहार कुछ भी हो सकता है, इसका वर्णन करे।

पुस्तक-समीक्षा का समापन

पुस्तक समीक्षा का समापन सबसे महत्त्वपूर्ण भाग होता है। समापन इस तरह से करना है कि पुस्तक पाठकों को किस तरह से आकर्षित करे क्योंकि इसमें युवा पाठक, वयस्क पाठक या वृद्ध पाठक भी हो सकते हैं। आप इस पुस्तक की किसी और पुस्तक से तुलना करते हैं तो उसे भी सम्मिलित कर लीजिये।

पुस्तक का मूल्यांकन

अंततः आप पुस्तक का मूल्यांकन कर सकते हैं। जैसे इसे स्कोर दे सकते हैं। इससे पाठकों को लगेगा कि पुस्तक को पढ़ना चाहिए या नहीं। समीक्षा लेखन के कुछ उदाहरण-

पुस्तक समीक्षा

सूर्यनाथ सिंह की 'कहो कहानी' की समीक्षा

सूर्यनाथ सिंह जी की पुस्तक 'कहो कहानी' हाल ही में प्रकाशित हुई है। मैंने उसकी सभी कहानियाँ पढ़ी हैं। पुस्तक में ऐसी कहानियाँ हैं जो दस से पन्द्रह वर्ष के पाठकों की रुचि के अनुसार लिखी गई है। वैज्ञानिक विषय की कहानियों में कल्पनाएँ अधिक होती हैं और तथ्य कम। जैसे चंद्रमा में ऑक्सीजन और पानी के अभाव में मानव बस्ती की कल्पना अविश्वसनीय है। कुछ भूत कथाएँ रोमांचक भी हैं। इंदौर का भूत ऐसी ही कथा है, जिसमें अंत तक रहस्य बना रहता है।सूर्यनाथ सिंह के इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी गठी हुई कथावस्तु और प्रवाहमयी भाषा है। कुल मिलाकर पुस्तक पढ़ने योग्य है।

फिल्म समीक्षा

फिल्म 'मेरा गाँव' बहुत अच्छी है। इसकी लोकप्रियता ने सभी आंकड़े तोड़ दिए हैं। नामी-गिरामी सितारों के बिना इतनी आकर्षक फिल्म देखकर दाँतों तले उंगली दबानी पड़ती है। कथानक भारतीय गाँव का परिवेश है, पर वहाँ के लोग जागरूक हैं। वे अपनी सभ्यता-संस्कृति और अपना स्वयं का महत्त्व भी जानते हैं। फिल्म का छायांकन, गीत और संगीत बहुत मधुर और लोकप्रिय है। भारत के किसी गाँव में ही पूरी फिल्म की शूटिंग हुई है और जगह भी कम बदली गई है। अतः इस फिल्म की लागत भी कम आई होगी।

टीवी कार्यक्रम

टी.वी कार्यक्रम - रूपकुंड का प्रारंभ अच्छा था। हिमालय की हरियाली, ऊँचे पहाड़, पहथरीले बर्फीले पहाड़, गहरी घाटियाँ, दुर्गम रास्ते बहुत ही मनमोहक लगे। फोटोग्राफी और वर्णन में अच्छा तालमेल था। बीच-बीच में नंदा देवी और उससे जुड़ी लोक कथाओं तथा विश्वासों की चर्चा थी। लेकिन जल्द ही महसूस हुआ कि सूत्रधार पुरातन कथाओं और विश्वासों पर अधिक बल दे रहा है और उन्हें तर्क की कसौटी पर नहीं कस रहा है। दुर्गम चढ़ाई में अपने दल के साहस का बखान तो बार-बार कर रहा है लेकिन वहाँ के निवासियों के जीवन की बात नहीं कर रहा, जो सदियों से उन दुर्गम क्षेत्रों में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। रूपकुंड पहुंचने पर बार-बार कैमरा दो-चार दृश्यों को ही दुहरा रहा था। जो भी जानकारियाँ दी जा रही थीं, वे सामान्य थीं और बार-बार दोहराने से उबाऊ प्रतीत हो रही थीं।

समालोचना

समालोचना का उद्देश्य हमारे यहाँ गुण-दोष विवेचन ही समझा जाता रहा है। संस्कृत-साहित्य में समालोचना का पुराना ढंग यह था कि जब कोई आचार्य या साहित्य-मीमांसक कोई नया लक्षण-ग्रंथ लिखता था तब जिन काव्य-रचनाओं को वह उत्कृष्ट समझता था उन्हें रस, अलंकार आदि के उदाहरणों के रूप में उद्धत करता था और जिन्हें दुष्ट समझता था उन्हें दोषों के उदाहरण में देता था। फिर जिसे उसकी राय नापसंद होती थी वह उन्हीं उदाहरणों में से अच्छे ठहराए हुए पद्यों में दोष दिखाता था और बुरे ठहराए हुए पद्यों के दोष का परिहार करता था। इसके अतिरिक्त जो दूसरा उद्देश्य 'समालोचना का होता है-अर्थात् कवियों की अलग-अलग विशेषताओं का दिग्दर्शन- उसकी पूर्ति किसी कवि की स्तुति में दो-एक श्लोकबद्ध उक्तियाँ कहकर ही लोग मान लिया करते थे, जैसे–

निर्गतासु न वा कस्य कालिदामस्य सूक्तिषु।
प्रीतिः मधुरसांद्रासु मंजरीष्विव जायते॥
उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
नेषधे पदलालित्यं, माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

आलोचना

आलोचना 'लुच् ' धातु से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ देखना होता है। साहित्य में रचना की उपादेयता की मीमांसा को आलोचना कहा जाता है। आलोचना दो दृष्टियों से की जाती है - 1- विहगावलोकन 2 - सिंहावलोकन। विहगावलोकन में रचना की परीक्षा सरसरी तौर पर की जाती है।उस समय जिन बिन्दुओं पर ध्यान होता है उसी के अनुसार रचना के गुणदोष की विवेचना की जाती है। इस प्रक्रिया को आलोचना एवं इसके कर्ता को आलोचक कहते हैं।

सिंहावलोकन में सिंह के समान दृष्टि डाली जाती हैं, शायद आप इस तथ्य से अवगत हों कि सिंह आगे देखकर चलते चलते पीछे मुड़कर भी देख लिया करता है, उसकी निगाह से कोई चीज वंचित नहीं रह पाती। ठीक उसी प्रकार रचना की विवेचना के समय हर पहलू की विवेचना कर ली जाय, गुणदोष की सम्यक परीक्षा कर ली जाय। समालोचना का संधि-विच्छेद आधारित शाब्दिक अर्थ है- सम्यक रूप से लोचन (दृष्टि) से देखना। ऐसी प्रक्रिया को समालोचना कहा जाता है तथा ऐसे व्यक्ति को समालोचक कहा जाता है।

आलोचना या समालोचना किसी वस्तु/विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें पाठ अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया शामिल है।

संस्कृत में प्रचलित 'टीका-व्याख्या' और 'काव्य-सिद्धान्तनिरूपण' के लिए भी आलोचना शब्द का प्रयोग कर लिया जाता है किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्पष्ट मत है कि आधुनिक आलोचना, संस्कृत के काव्य-सिद्धान्तनिरूपण से स्वतंत्र चीज़ है। आलोचना का कार्य है किसी साहित्यक रचना की अच्छी तरह परीक्षा करके उसके रूप, गुण और अर्थव्यस्था का निर्धारण करना।

डॉक्टर श्यामसुन्दर दास के अनुसार, 'यदि हम साहित्य को जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा'। अर्थात् आलोचना का कर्तव्य साहित्यक कृति की विश्लेषण परक व्याख्या है। साहित्यकार जीवन और अनभुव के जिन तत्वों के संश्लेषण से साहित्य रचना करता है, आलोचना उन्हीं तत्वों का विश्लेषण करती है। साहित्य में जहाँ रागतत्व प्रधान है वहाँ आलोचना में बुद्धि तत्व। आलोचना ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों और शिस्तयों का भी आकलन करती है और साहित्य पर उनके पड़ने वाले

प्रभावों की विवेचना करती है। व्यक्तिगत रुचि के आधार पर किसी कृति की निन्दा या प्रशंसा करना आलोचना का धर्म नहीं है।

कृति की व्याख्या और विश्लेषण के लिए आलोचना में पद्धति और प्रणाली का महत्त्व होता है। आलोचना करते समय आलोचक अपने व्यक्तिगत राग-द्वेष, रुचि-अरुचि से तभी बच सकता है जब पद्धति का अनुसरण करे, वह तभी वस्तुनिष्ठ होकर साहित्य के प्रति न्याय कर सकता है। इस दृष्टि से हिन्दी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को सर्वश्रेष्ठ आलोचक माना जाता है।

उद्देश्य के आधार पर आलोचना निम्नलिखित चार प्रकार की हैं जो संबंधित व्यक्ति के निहित उद्देश्यों के आधार पर और उनकी पूर्ति हेतु की जाती हैं -सैद्धान्तिक आलोचना, , निर्णयात्मक आलोचना, प्रभावाभिव्यंजक आलोचना, विश्लेष्णात्मक आलोचना।

उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य मूल्यांकन की विभिन्न विधाओं पर प्रकाश डालना
2. समीक्षा और आलोचना के अंतर को प्रकट करना
3. समीक्षा और आलोचना संबंधी अन्य क्षेत्रों को स्पष्ट करना
4. समीक्षा और आलोचना शब्दों और उनके प्रयोग की स्थितियों को समझाना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी साहित्य का मूल्यांकन उसकी सफलता एवं असफलता निर्धारित करता है।
2. हिंदी साहित्य के मूल्यांकन हेतु विभिन्न विधाओं जैसे- समीक्षा, समालोचना और आलोचना का जाता है।
3. समीक्षा, समालोचना और आलोचना का प्रायः एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है।
4. समीक्षा और आलोचना एक दूसरे से भिन्न हैं।

साहित्य पुनरावलोकन

'किसी कवि या पुस्तक के गुणदोष या सुक्ष्म विशेषताएँ दिखाने के लिये एक दूसरी पुस्तक तैयार करने की चाल भारत में कभी भी नहीं थी। इसके विपरीत, यूरोप में ऐसा करना सामान्य बात थी। वहाँ समालोचना काव्य-सिद्धांत-निरूपण से स्वतंत्र एक विषय ही हो गया। केवल गुण-दोष दिखाने वाले लेख या पुस्तकों की लोकप्रियता तो थोड़े ही दिनों रहती थी, पर किसी कवि की विशेषताओं का दिग्दर्शन करानेवाली, उसकी विचारधारा में डूबकर उसकी अंतर्वृत्तियों की छानबीन करानेवाली पुस्तक, जिसमें गुणदोष-कथन भी आ जाता था, ही स्थायी साहित्य में स्थान पाती थी। समालोचना के दो प्रधान मार्ग होते हैं-निर्णात्मक समालोचना व्याख्यात्मक समालोचना'।[1]

'निर्णयात्मक आलोचना किसी रचना के गुण-दोष निरूपित कर उसका मूल्य निर्धारित करती है। उसमें लेखक या कवि की कहीं प्रशंसा होती हैं, कहीं निंदा। व्याख्यात्मक आलोचना किसी ग्रंथ में आई हुई बातों को एक व्यवस्थित रूप में सामने रखकर उनका अनेक प्रकार से स्पष्टीकरण करती है। यह मूल्य निर्धारित करने नहीं जाती। ऐसी आलोचना अपने शुद्ध रूप में काव्य-वस्तु ही तक परिमित रहती है अर्थात् उस के अंग-प्रत्यंग की विशेषताओं को ढूंढ़ निकालने और भावों की व्यवच्छेदात्मक व्याख्या करने में तत्पर रहती है। पर इस व्याख्यात्मक समालोचना के अंतर्गत बहुत सी बाहरी बातों का भी विचार होता है-जैसे, सामाजिक, राजनीतिक, सांप्रदायिक परिस्थिति आदि का प्रभाव। ऐसी समीक्षा को 'ऐतिहासिक समीक्षा' कहते हैं। इसका उद्देश्य यह निर्दिष्ट करना होता है कि किसी रचना का उसी प्रकार की और रचनाओं से क्या संबंध है और उसका साहित्य की चली आती हुई परंपरा में क्या स्थान है। बाह्य पद्धति के अंतर्गत ही कवि के जीवनक्रम और स्वभाव आदि के अध्ययन द्वारा उसकी अंतर्वृत्तियों का सूक्ष्म अनुसंधान भी है, जिसे "मनोवैज्ञानिक आलोचना" कहते है। इनके अतिरिक्त दर्शन, विज्ञान आदि की दृष्टि से समालोचना की और भी कई पद्धतियाँ हैं और हो सकती हैं। इस प्रकार समालोचना के स्वरूप का विकास योरप में हुआ। केवल निर्णयात्मक समालोचना की चाल बहुत कुछ उठ गई है। अपनी भली बुरी रुचि के अनुसार कवियों की श्रेणी बाँधना, उन्हें नंबर देना अब एक बेहूदः बात समझी जाती है'।[2]

'हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन के हमेशा से प्रमाण मिलते रहे हैं जिनका मूल्यांकन अलग-अलग तरीकों से किया जाता रहा है। आत्मकथा के मूल्यांकन सर्वोपयुक्त तरीका उसकी समीक्षा है जो उक्त आत्मकथा के समग्र और गहन अध्ययन के आधार पर ही संभव है। गहन एवं समग्र अध्ययन के बिना सतही तौर पर की गई समीक्षा आत्मकथा लेखन की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करने में असमर्थ रहती है'।[3]

'हिंदी उपन्यास का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। प्रेमचंद ने इसे मानवीय धरातल पर लाकर उपन्यास के माध्यम से समाज जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। उपन्यास जीवन के समांतर चलने वाली विधा है। इसी कारण प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में इस परिवर्तित जीवन की अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप में हुई है। इस तथ्य का मूल्यांकन अनेकों साहित्यकारों एवं समालोचकों और आलोचकों ने उनके उपन्यासों की समीक्षा, समालोचना और उनके द्वारा प्रस्तुत समकालीन परिदृश्य की आलोचना के द्वारा की है'।[4]

'समाज के बदलते स्वरुप के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक सम्भावनायें और समस्याऐं जन्म ले रही हैं। इन संभावनाओं और समस्याओं की खोज तथा समाधान शैक्षिक

अनुसंधानों द्वारा ही संभव है। शैक्षिक अनुसन्धान शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में उठने वाले प्रश्नों में निहित 'क्यों' और 'कैसे' को खोजने, कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करने को प्रेरित करते हैं जो समीक्षा और आलोचना द्वारा ही संभव है'।[5]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र लेखन हेतु लेखिका द्वारा ग्रहण की गई शोध पद्धति के अंतर्गत गुणात्मक शोध प्ररचना, पुस्तकों एवं इंटरनेट पर उपलब्ध प्रकाशित शोध अध्ययनों से संकलित द्वितीयक तथ्यात्मक विषय सामग्री, अंतर्वस्तु विश्लेषण और तदनुसार निष्कर्ष लेखन सम्मिलित है।

निष्कर्ष

समीक्षा से आशय विश्लेषण से है जिसमें किसी भी घटना, पुस्तक,खेल, फिल्म आदि के सभी पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है अर्थात गुण, दोष दोनों के बारे में बताया जाता है, जबकि आलोचना और समालोचना दोनों समानार्थी हैं इसमें किसी भी चीज ,घटना या व्यक्ति के दोषों को ही प्रमुखता से उजागर किया जाता है। आलोचना में केवल नकारात्मक टिप्पणी की जाती है जबकि समालोचना में नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों प्रकार की टिप्पणियाँ रहती है।

उदाहरण : आलोचना

बाबू जयशंकर प्रसाद की कामायनी में भाषा इतनी क्लिष्ट है कि इसे साहित्य की श्रेणी में रखना मूर्खता होगी। आलोचना किसी काम/प्रोजेक्ट/बजट और पुस्तक के लेखन के बाद प्रकाशित होने पर आलोचना की जाती है इससे उसमे छूटे विषय और कमियों पर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिससे उसको अगले संस्करण में सुधार लिया जाय। यदि आलोचक न हो तो लेखक का मार्गदर्शन नही हो पायेगा क्योकि हमारी कमियां हमे खुद दिखाई नही देती है जब तक दूसरा उस बात को न बताये । आलोचक का महत्व पूर्ण स्थान है।

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय
बिन पानी साबुन बिना सबै मैल धुल जाय

समालोचना

किसी वस्तु/विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वालि साहित्यिक विधा है। समालोचना का शाब्दिक अर्थ है अच्छी तरह देखना'। समालोचना:- कामायनी की भाषा दुरुह है लेकिन दर्शन शास्त्र के विद्यार्थी के लिये वह एक अपरिहार्य रचना है जो साहित्य की अनमोल धरोहर है। तीनों शब्दों का अर्थ है- विश्लेषण करना या मूल्यांकन करना। विस्तृत अर्थ में किसी भी विधा का उसके गुणों और दोषों के आधार पर निष्पक्ष राय प्रस्तुत करना...ताकि संबंधित विधा का बेहतर निष्कर्ष प्रस्तुत हो सके।

संदर्भ सूची

1. *Methods and Materials of Literary Criticism--Gayley & Scott (2008)*
2. *The ranking of writers in order of merit has become obsolete.--The New Criticism by J. E Spingarn (1911)*
3. *हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य: समीक्षात्मक आकलन, पीएच. डी. शोधप्रबंध- कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) श्रीमती गायत्री औदिच्य (2015)*
4. *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आंचलिक उपन्यास- हिंदी के आंचलिक उपन्यास: महत्व और विशेषताऐं (2015)*
5. *शैक्षिक लघुशोध (संकलित)- शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ (2011-12)*